पाठ 22

महाराजा श्री अग्रसेन

देवभूमि भारत को अवतारों की क्रीड़ा स्थली कहा जाता है। इस पवित्र भूमि में भगवान श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी और गुरु नानक जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया। इसी पावन धरती में एक ऐसे ही महामानव का जन्म हुआ। जिसने समूची मानवता को सर्वप्रथम समाजवाद का पाठ पढ़ाया। वह महान विभूति थे अग्रोहा नरेश महाराजा श्री अग्रसेन।

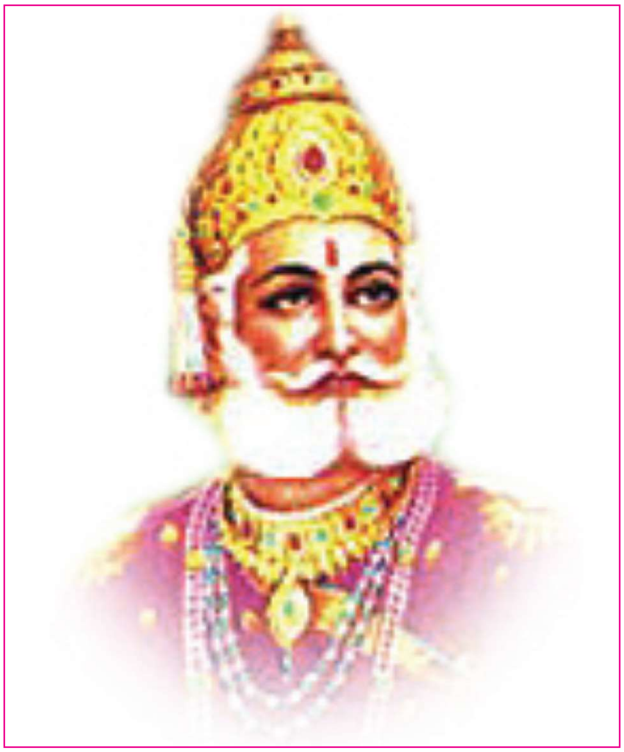

आज से 5125 वर्ष पूर्व आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को महाराजा श्री अग्रसेन का जन्म हरियाणा राज्य के हिसार जिले के प्रताप नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम महाराजा वल्लभ था। महाराजा श्री अग्रसेन जी की शिक्षा उज्जैन में ताण्डव्य ऋषि के आश्रम में हुई। वह बचपन से ही बड़े आज्ञाकारी और कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने छोटी उम्र में ही वैद्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीति का गहन अध्ययन किया। उनका विवाह नागलोक के राजा वासुकि की कन्या माधवी से हुआ था।

शूरवीरता और परोपकार के कारण सभी के प्रिय श्री अग्रसेन जी को महाराजा वल्लभ ने राजतिलक कर स्वतंत्र रूप से राज्य करने का अवसर दिया।

उस समय देश में राजवंशों की भरमार थी। सत्ता मद में लिप्त राजा एक दूसरे के राज्य को हड़पने के लिए युद्ध हेतु आमादा रहते थे। महाराजा श्री अग्रसेन ने उस समय की अव्यवस्थित राजनीति को देख-समझकर उसमें सुधार कर एक ठोस साम्राज्य स्थापित किया। अग्रोहा नाम से एक नगर बसाया। उन्होंने जनहित एवं जनकल्याण के लिए ही शासन किया। कभी किसी राज्य पर आक्रमण नहीं किया। अपनी शक्ति को राज्य के विकास में लगाया और नागरिकों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने का प्रयास किया।

महाराजा श्री अग्रसेन समाजवाद के प्रथम प्रणेता थे। इनके राज्य में सभी जातियों और धर्मों के लगभग एक लाख परिवार रहते थे। सबको अपना-अपना धर्म पालन करने और अपनी-अपनी उपासना करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। सभी सुख-शांतिपूर्वक सुखी जीवन जीते थे। सबमें समानता और भाईचारे का आदर्श व्यवहार था। ऊँच-नीच और जाति-पाँति का कोई भेदभाव न था। पूरे राज्य में न बेकारी थी और न बेरोजगारी। न कोई दुःखी था और न कोई गरीब। महाराजा श्री अग्रसेन ने एक परिपाटी बनाई थी कि यदि कोई व्यक्ति अग्रोहा राज्य में आकर बसता है तो प्रत्येक परिवार उसे एक ईंट और एक रुपया देगा। इस

प्रकार से मकान के लिए ईंटें और व्यापार के लिए धन, सहज ही मिल जाता था। फिर उसकी आर्थिक स्थिति भी राज्य में रह रहे सबके समान हो जाती थी। इस प्रकार उन्होंने अपने राज्य में एक आदर्श पद्धति को जन्म देकर समाजवाद की नींव रखी।

महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में सुव्यवस्था बनाए रखने हेतु 18 गणराज्य बनाए। प्रत्येक गणराज्य से एक-एक निर्वाचित प्रतिनिधि होता था। ये प्रतिनिधि शासन परिषद के सदस्य होते थे। इनके परामर्श से ही राज्य का शासन चलता था।

स्वभाव से धार्मिक महाराजा श्री अग्रसेन लक्ष्मी के अनन्य उपासक थे। यज्ञों से उन्हें बहुत लगाव था। उन्होंने बड़े-बड़े 18 यज्ञ किए। उस समय यज्ञों में पशुबलि की कुप्रथा थी। उन्होंने सोचा यज्ञ जैसे पवित्र कार्य में पशुबलि क्यों? वे हिंसा को दुष्कर्म और घोर पाप मानते थे। वे कहते थे कि यदि हम किसी को जीवन दान नहीं दे सकते तो हमें किसी के प्राण हर लेने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने घोषणा की कि उनके राज्य में कहीं भी हिंसा नहीं होगी। यज्ञों में पशुबलि नहीं दी जाएगी। उन्होंने दया, प्रेम और सहानुभूति का संदेश दिया। जीवदया के प्रति लोगों में आस्था जगाई। यज्ञों के माध्यम से जन-जन को संगठित किया। वे यज्ञ को पर्यावरण परिशोधन का प्रमुख माध्यम भी मानते थे। इन्हीं 18 यज्ञों के आचार्यों के नाम पर अग्रवंश के 18 गोत्रों का चलन प्रारंभ हुआ। कहा जाता है कि उन्होंने महालक्ष्मी की घोर तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने उन्हें क्षत्रिय से वैश्य वर्ण ग्रहण करने के आदेश दिये। तभी से महाराजा श्री अग्रसेन ने वैश्य वर्ण ग्रहण कर, वैश्य वंश की स्थापना की। उन्होंने अग्रवंश की नींव रखी यही अग्रवंशज अग्रवाल कहलाते हैं, जो आज विश्वभर में फैले हुए हैं।

महाराजा श्री अग्रसेन ने अग्रोहा को संपन्न और वैभवशाली राज्य बनाया था। पुरातत्व विशेषज्ञों को अग्रोहा की खुदाई में मिले सोने-चांदी के सिक्के, आभूषण, तांबे की वस्तुएँ, बर्तन, खिलौने, मंदिर, मूर्तियाँ, आलीशान भवनों के अवशेष आज भी महाराजा अग्रसेन के वैभवशाली अग्रोहा की कहानी कहते हैं।

महाराजा श्री अग्रसेन लोककल्याण और श्रेष्ठ आदर्शों के कारण अमर हैं। उनकी स्मृति में भारत सरकार ने 24 सितंबर 1976 को 25 पैसे का डाक टिकिट जारी किया। एक माल वाहक जहाज और दिल्ली से हिसार तक के राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम भी महाराजा श्री अग्रसेन के नाम पर रखा गया है। मध्यप्रदेश शासन ने भी राजमार्ग क्रमांक-27, इंदौर से उज्जैन का नाम श्री अग्रसेन मार्ग घोषित किया है।

महाराजा श्री अग्रसेन की जन्मस्थली अग्रोहा आज भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में माना जाने लगा है और यह अग्रवाल जाति की प्रमुख तीर्थस्थली है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्र. 1 निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) महाराजा अग्रसेनजी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ख) अग्रवाल समाज के प्रवर्तक कौन थे तथा इस समाज के कितने गोत्र प्रचलित हैं?

(ग) महाराजा अग्रसेन ने राज्य में किस परिपाटी का चलन प्रारंभ किया?

(घ) अग्रसेनजी के राज्य में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था कैसे बनाई गई?

(ङ) महाराजा अग्रसेन ने पशुबलि प्रथा क्यों बन्द की?

भाषा अध्ययन

प्र. 1 पाठ में से संयोजक चिन्ह वाले शब्द छाँटकर लिखिए जैसे-देख-समझकर.

प्र. 2 निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

पाठ पढ़ाना, आमादा रहना, नींव रखना, पेट पालना, लकीर के फकीर, कूपमण्डूक.

प्र. 3 निम्नांकित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखिए-

अव्यवस्थीत, आर्दश, नीवार्चित, लक्ष्मि, अननय, वेश्व, दुस्कर्म, सहनूभुति।

योग्यता विस्तार

प्र. 1 पाठ में से उन गुणों को छाँटकर लिखिए जो किसी व्यक्ति को महामानव कहने में सहायक हैं।

प्र. 2 महाराजा अग्रसेन के जीवन से क्या-क्या शिक्षाएँ मिलती हैं, सार रूप में लिखिए।

जीवन संघर्ष में वही सफल होता है जिसने शांत रहना और धैर्य रखना सीखा है।